बंदर और मगरमच्छ

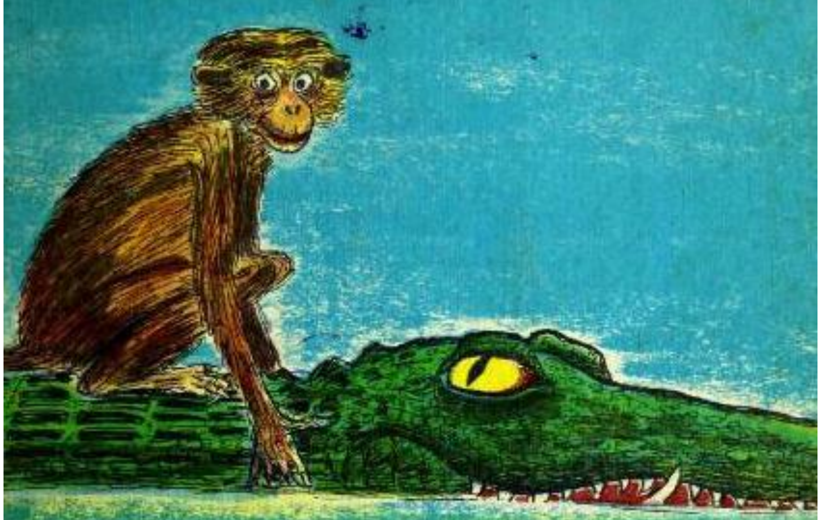

एक जातक कथा

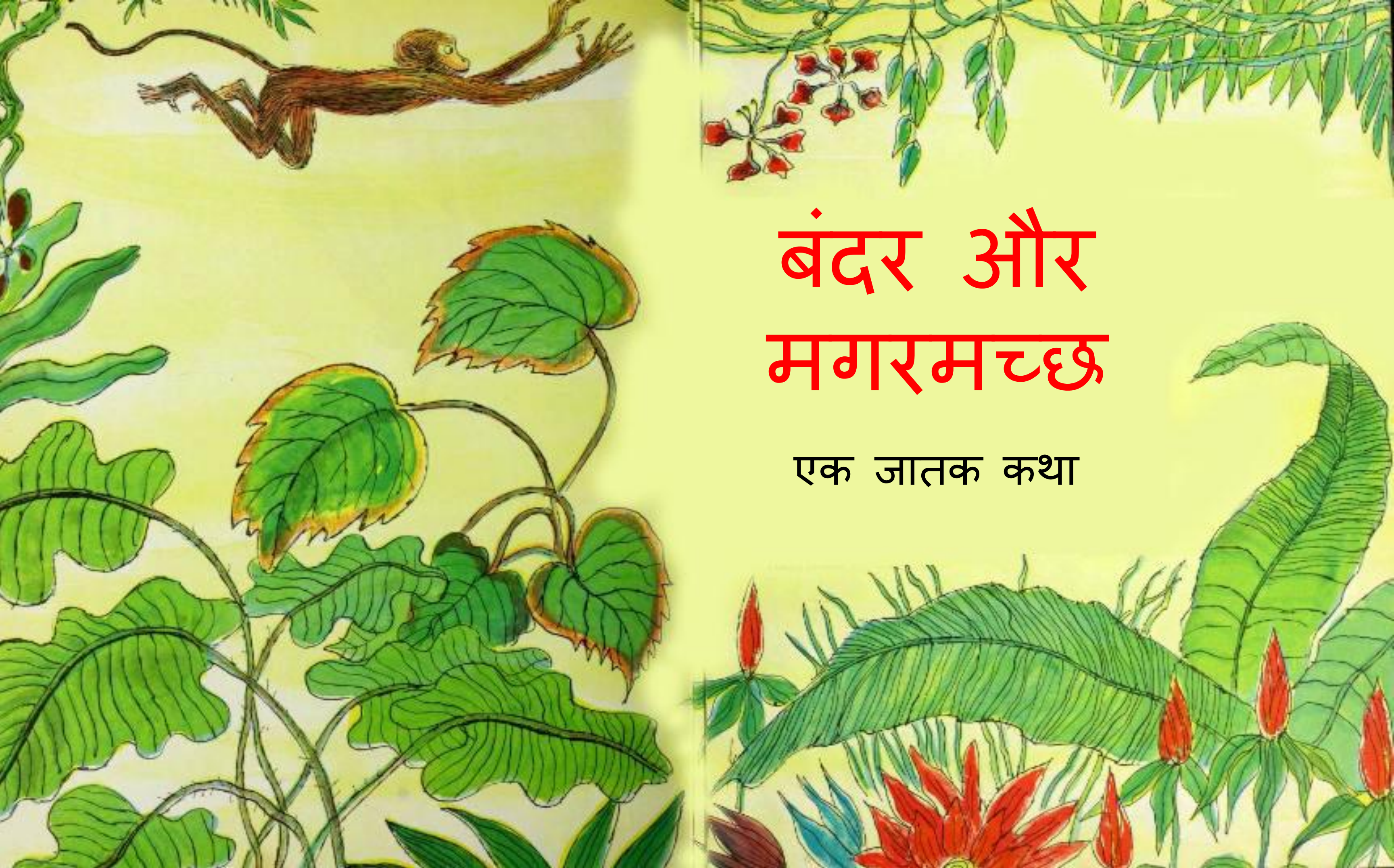

बंदर और मगरमच्छ

एक जातक कथा

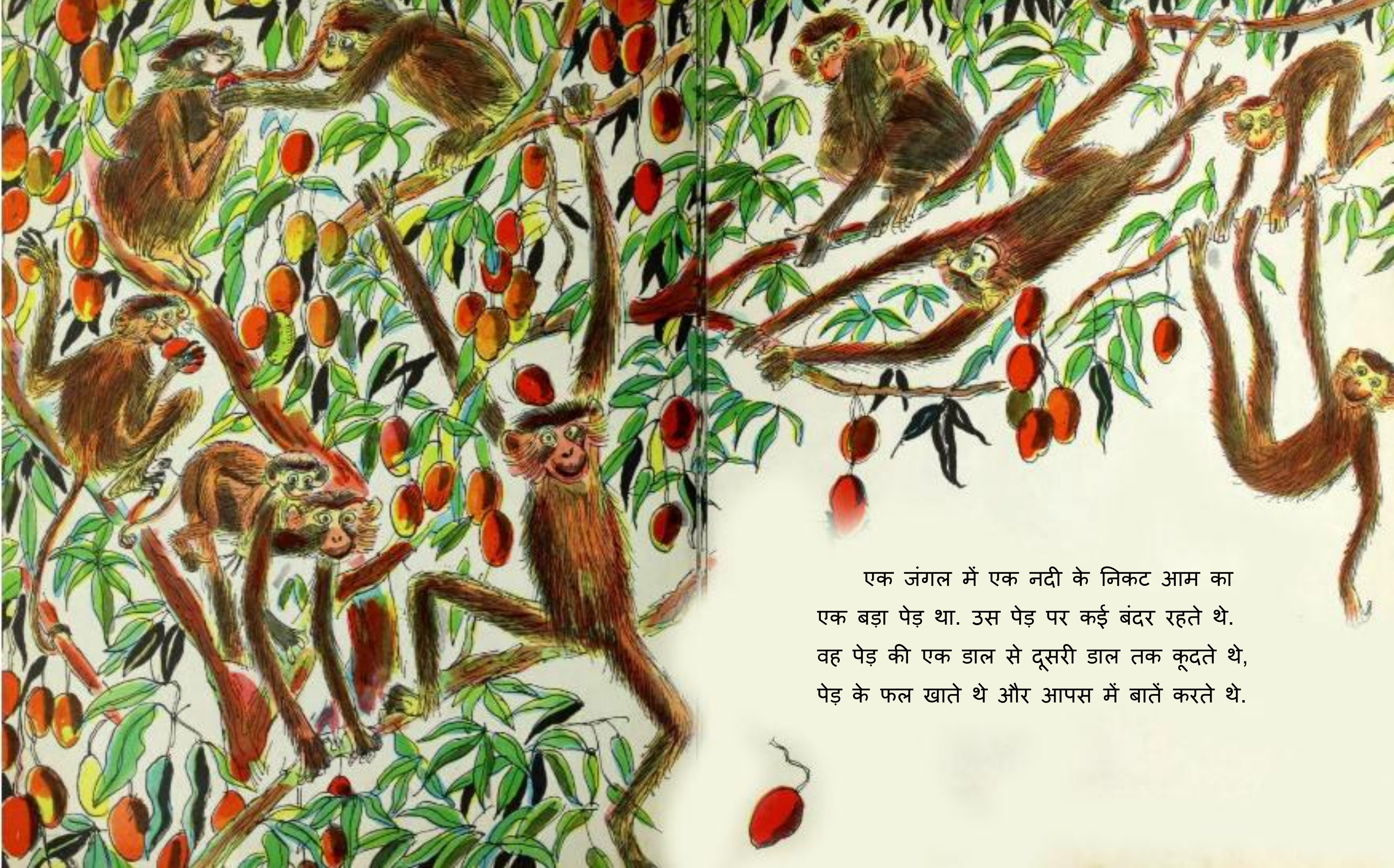

एक जंगल में एक नदी के निकट आम का एक बड़ा पेड़ था. उस पेड़ पर कई बंदर रहते थे. वह पेड़ की एक डाल से दूसरी डाल तक कूदते थे, पेड़ के फल खाते थे और आपस में बातें करते थे.

भूखे मगरमच्छ उस नदी में तैरते थे और किनारे पर आकर धूप सेंकते थे.

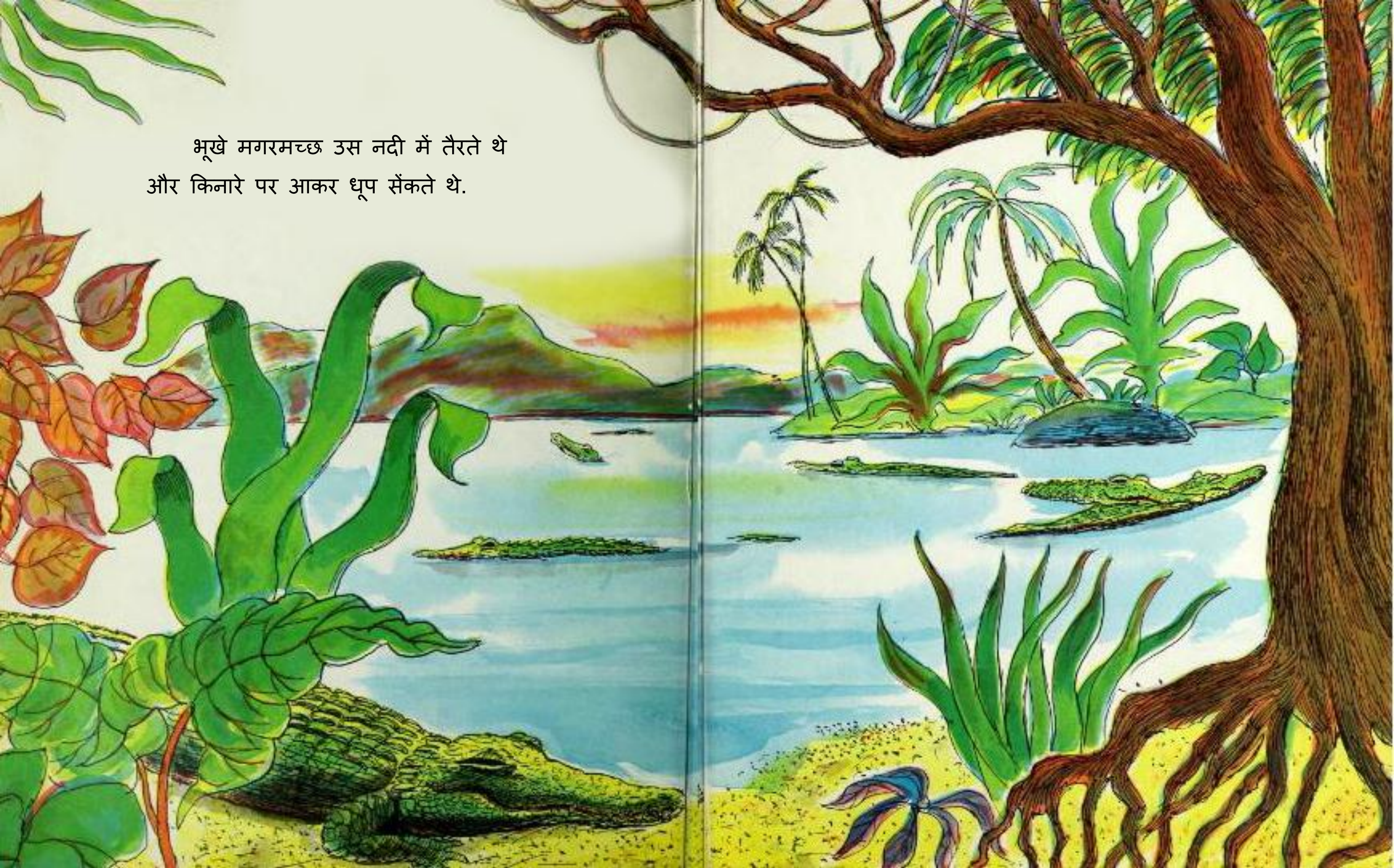

एक युवा मगरमच्छ दूसरों से अधिक भूखा था. उसे पेटभर खाना कभी मिलता ही न था.

युवा मगरमच्छ बंदरों को देर तक देखता रहता था. फिर एक दिन उसने एक वृद्ध, बुद्धिमान मगरमच्छ से कहा, “मैं एक बंदर को पकड़ कर खाना चाहता हूँ!”

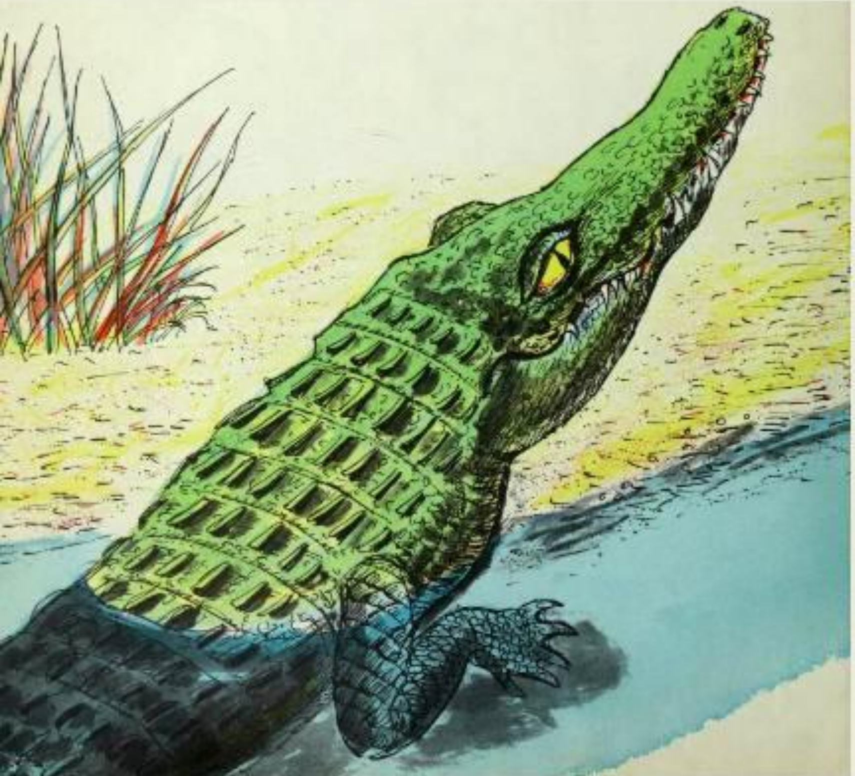

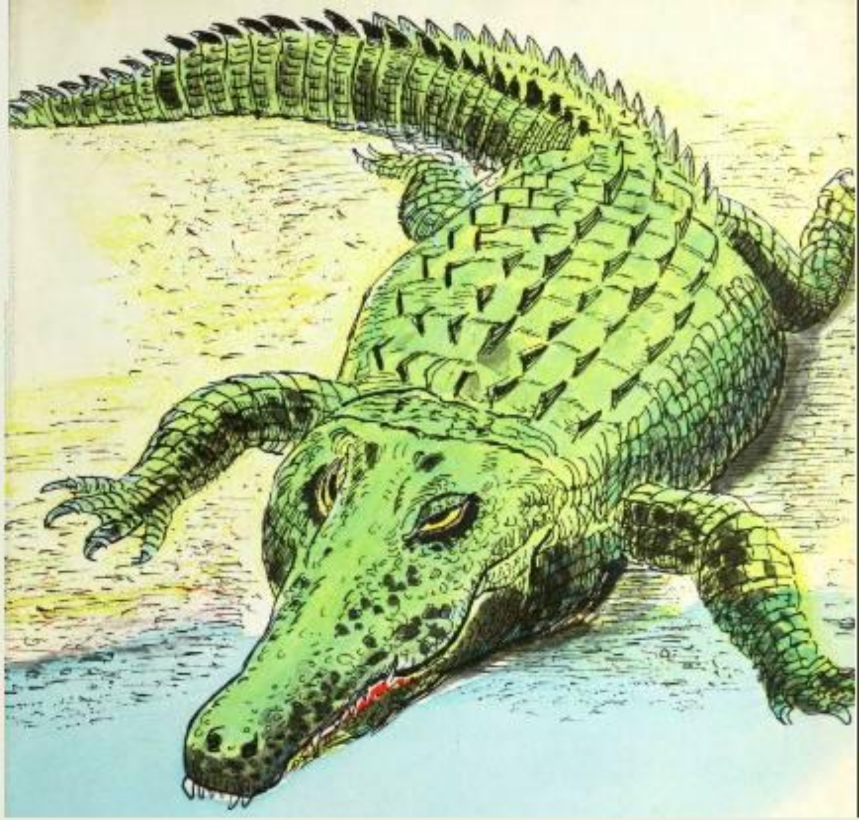

“तुम बंदर को कैसे पकड़ोगे?” वृद्ध मगरमच्छ ने पूछा. “तुम धरती पर नहीं चलते और बंदर पानी में आते नहीं. इसके अतिरिक्त, वह तुम से बहुत तेज़ हैं.”

“वह तेज़ होंगे,” युवा मगरमच्छ ने कहा, “लेकिन मैं उनसे अधिक चालाक हूँ. आप देखना!”

कई दिनों तक वह मगरमच्छ नदी में एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरता रहा और बंदरों का अध्ययन करता रहा.

फिर उसका ध्यान एक छोटे बंदर की ओर गया जो दूसरों से अधिक फुर्तीला था. यह बंदर पेड़ की सबसे ऊंची डालों पर कूदता था और ऊँची डालों पर लगे आम तोड़ कर खाता था.

“मुझे वह बंदर चाहिए,” मगरमच्छ ने अपने-आप से कहा. “लेकिन मैं उसे पकड़ूँगा कैसे?”

मगरमच्छ ने खूब सोचा और बहुत सोचने के बाद उसने एक तरकीब सोची.

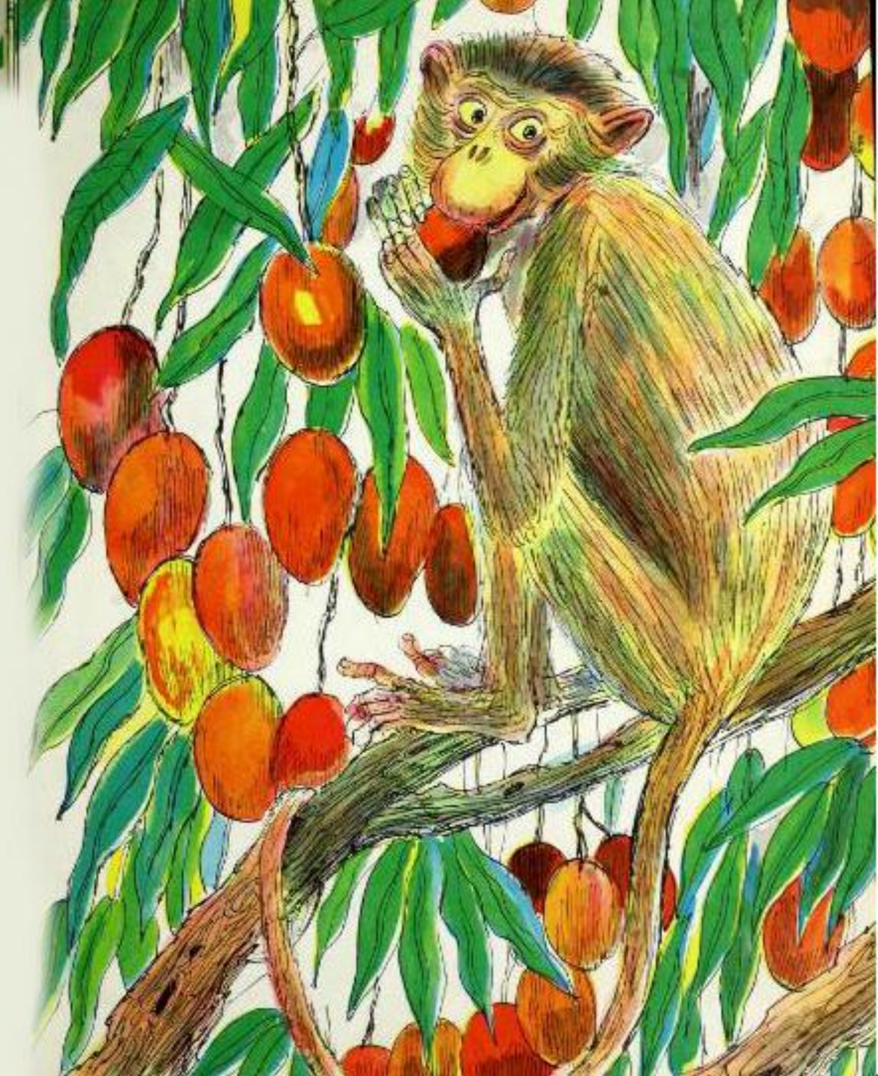

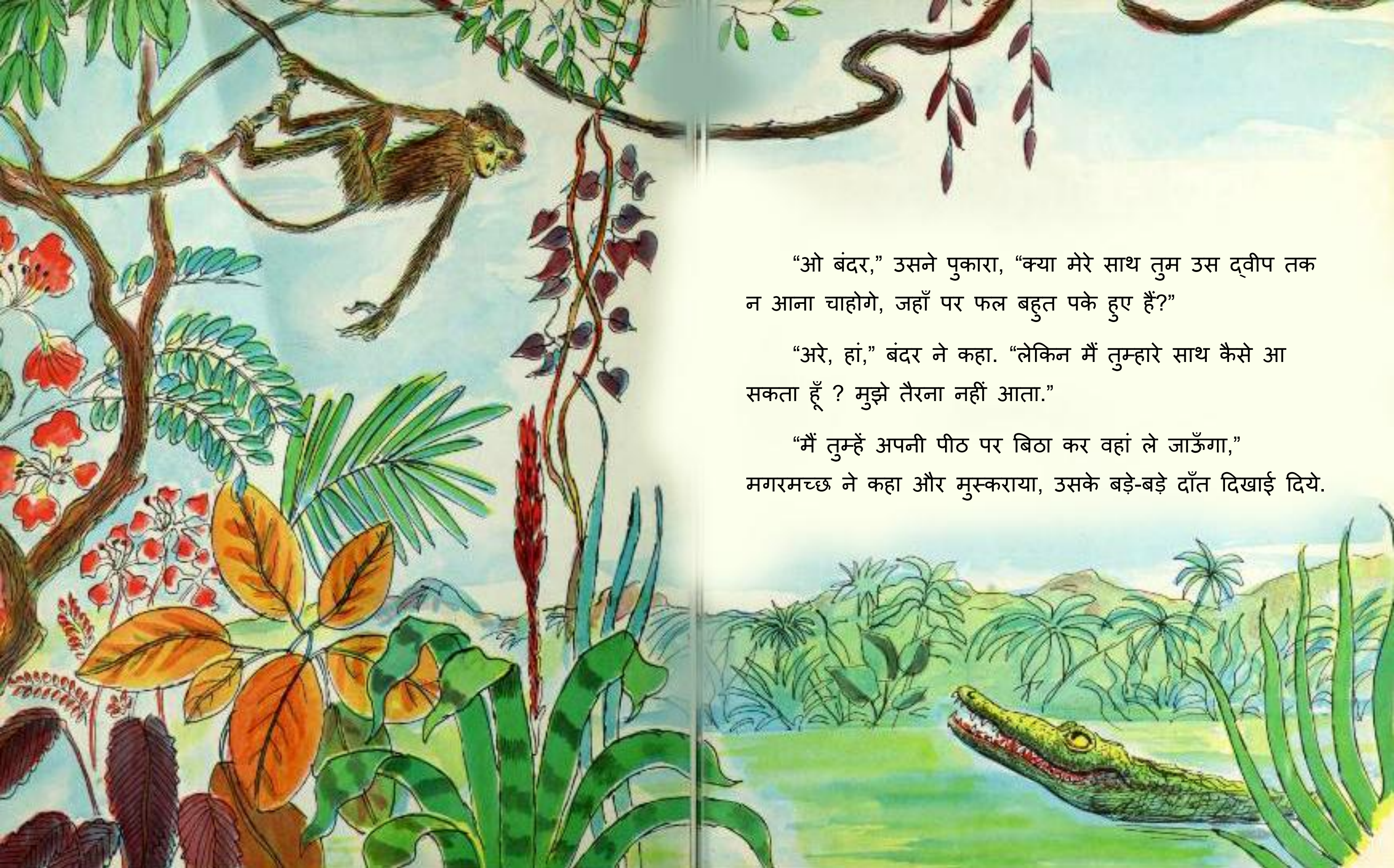

“ओ बंदर,” उसने पुकारा, “क्या मेरे साथ तुम उस द्वीप तक न आना चाहोगे, जहाँ पर फल बहुत पके हुए हैं?”

“अरे, हां,” बंदर ने कहा. “लेकिन मैं तुम्हारे साथ कैसे आ सकता हूँ ? मुझे तैरना नहीं आता.”

“मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बिठा कर वहां ले जाऊँगा,” मगरमच्छ ने कहा और मुस्कराया, उसके बड़े-बड़े दाँत दिखाई दिये.

बंदर पके हुए फल खाने को उतावला था. बस वह कूद कर मगरमच्छ की पीठ पर बैठ गया.

“चलो, चलते हैं!” मगरमच्छ ने कहा और पानी में तैरने लगा.

“तुम पर बैठ कर सवारी करने में मज़ा आ रहा,” बंदर बोला.

“क्या तुम्हें ऐसा लगता है? ठीक है, तो यह कैसा लगता है?” मगरमच्छ ने पूछा. और अचानक उसने पानी में डुबकी लगाई.

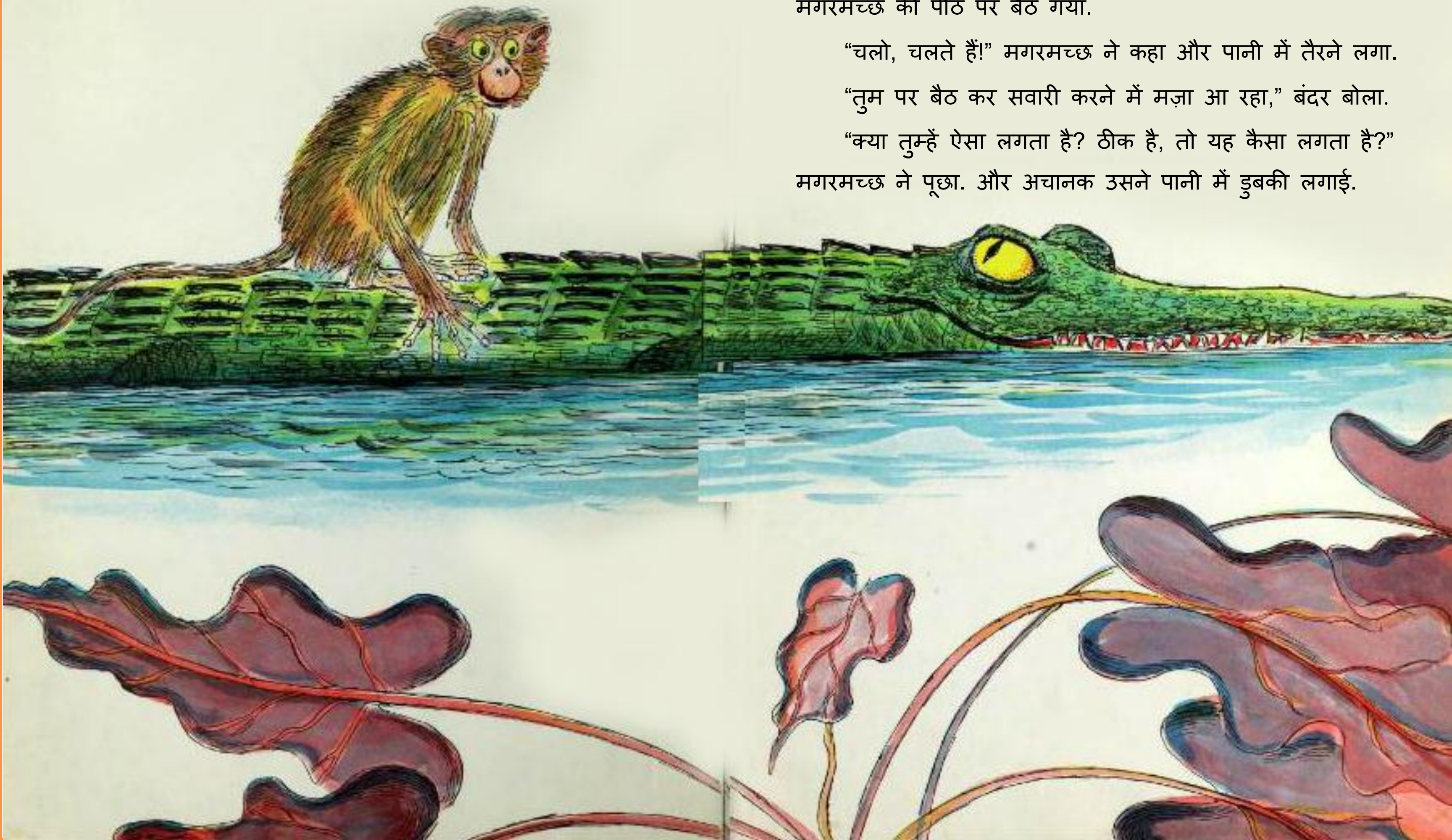

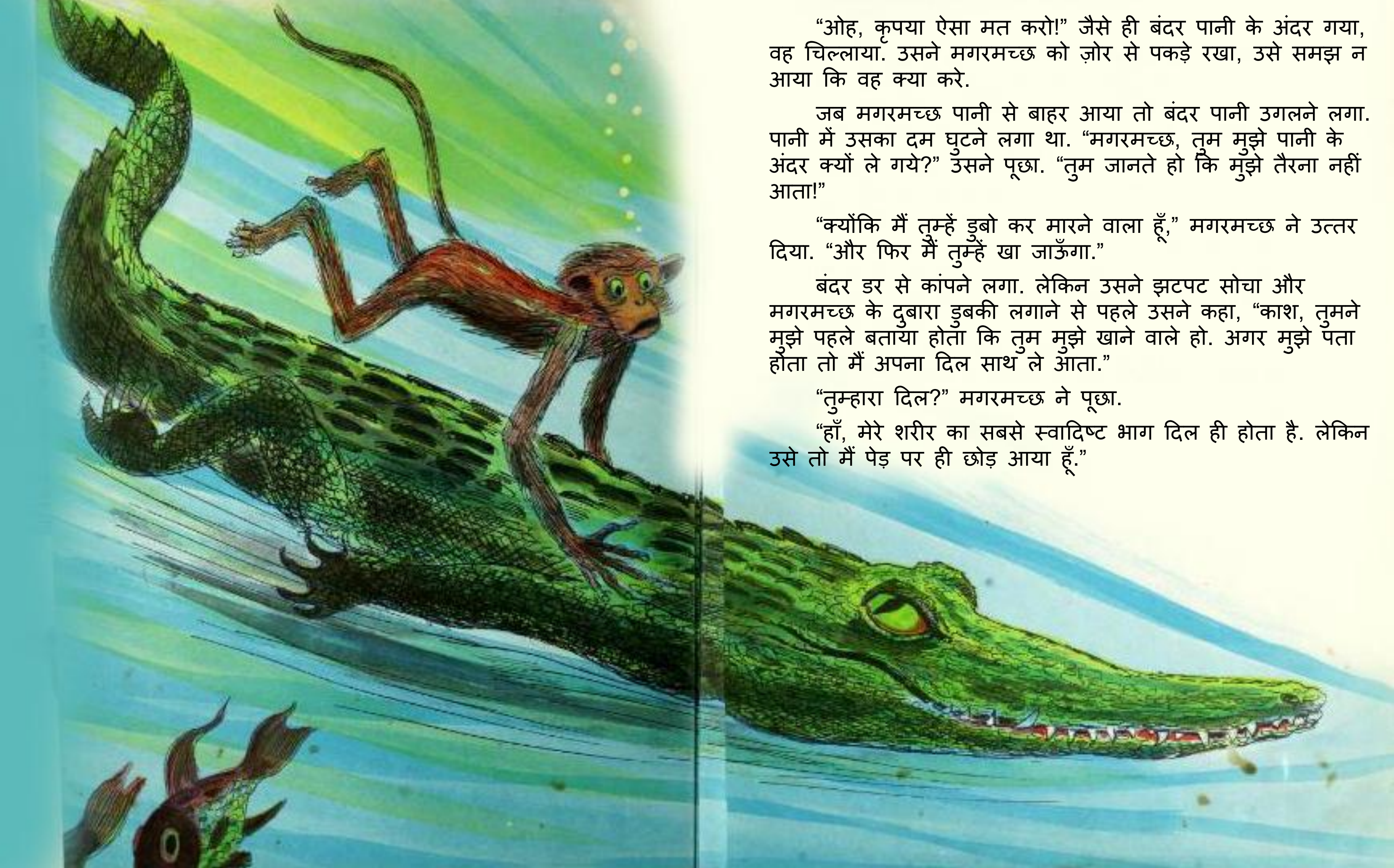

“ओह, कृपया ऐसा मत करो!” जैसे ही बंदर पानी के अंदर गया, वह चिल्लाया. उसने मगरमच्छ को ज़ोर से पकड़े रखा, उसे समझ न आया कि वह क्या करे.

जब मगरमच्छ पानी से बाहर आया तो बंदर पानी उगलने लगा. पानी में उसका दम घुटने लगा था. “मगरमच्छ, तुम मुझे पानी के अंदर क्यों ले गये?” उसने पूछा. “तुम जानते हो कि मुझे तैरना नहीं आता!”

“क्योंकि मैं तुम्हें डुबो कर मारने वाला हूँ,” मगरमच्छ ने उत्तर दिया. “और फिर मैं तुम्हें खा जाऊँगा.”

बंदर डर से कांपने लगा. लेकिन उसने झटपट सोचा और मगरमच्छ के दुबारा डुबकी लगाने से पहले उसने कहा, “काश, तुमने मुझे पहले बताया होता कि तुम मुझे खाने वाले हो. अगर मुझे पता होता तो मैं अपना दिल साथ ले आता.”

“तुम्हारा दिल?” मगरमच्छ ने पूछा.

“हाँ, मेरे शरीर का सबसे स्वादिष्ट भाग दिल ही होता है. लेकिन उसे तो मैं पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ.”

“ऐसा हो तो उसे लेने के लिए हमें वापस जाना होगा,” मगरमच्छ ने वापस घूमते हुए कहा.

“लेकिन हम उस द्वीप के इतने निकट हैं,” बंदर बोला. “कृपया पहले मुझे वहां ले जाओ.”

“नहीं,” मगरमच्छ ने कहा. “पहले मैं तुम्हें तुम्हारे पेड़ तक ले जाऊँगा. तुम अपना दिल ले कर मेरे पास आओगे. फिर हम उस द्वीप पर जाने की बात सोचेंगे.”

“ठीक है,” बंदर बोला.

और मगरमच्छ नदी के किनारे की ओर चल दिया.

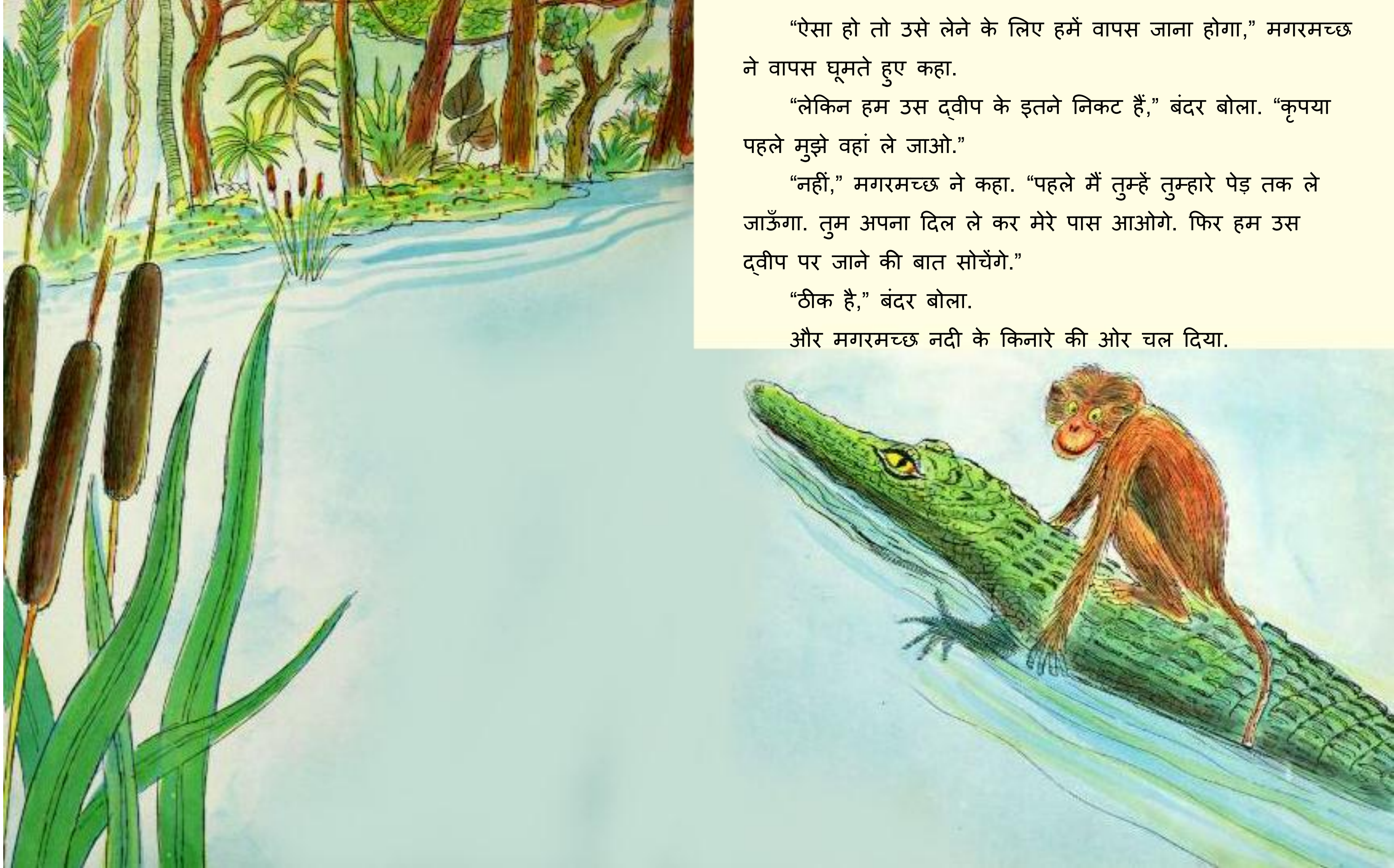

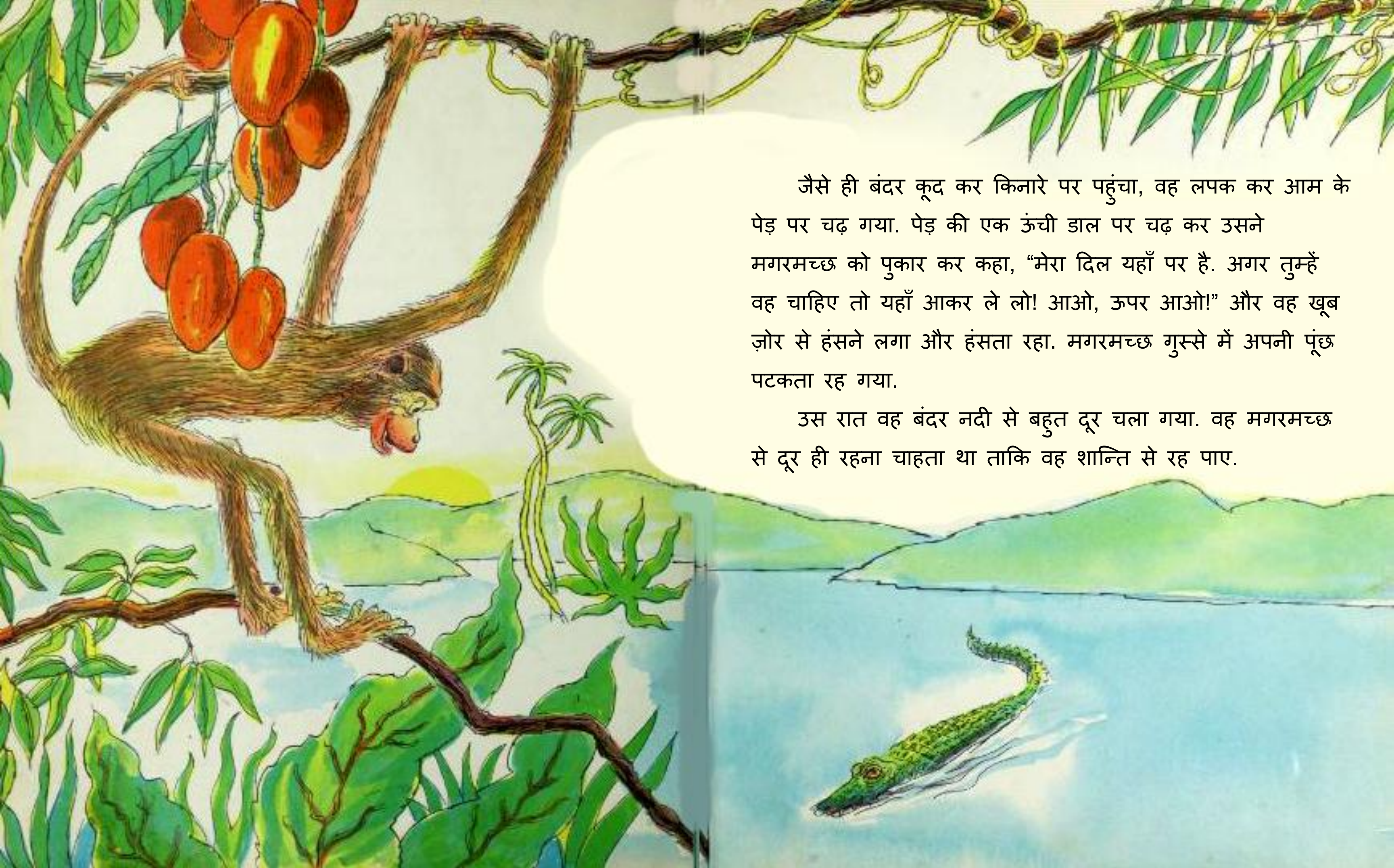

जैसे ही बंदर कूद कर किनारे पर पहुंचा, वह लपक कर आम के पेड़ पर चढ़ गया. पेड़ की एक ऊंची डाल पर चढ़ कर उसने मगरमच्छ को पुकार कर कहा, “मेरा दिल यहाँ पर है. अगर तुम्हें वह चाहिए तो यहाँ आकर ले लो! आओ, ऊपर आओ!” और वह खूब ज़ोर से हंसने लगा और हंसता रहा. मगरमच्छ गुस्से में अपनी पूंछ पटकता रह गया.

उस रात वह बंदर नदी से बहुत दूर चला गया. वह मगरमच्छ से दूर ही रहना चाहता था ताकि वह शान्ति से रह पाए.

लेकिन मगरमच्छ ने उस बंदर को पकड़ कर खा जाने का निश्चय कर रखा था. उसने कई जगह ढूंढा और आखिरकार बंदर को एक पेड़ पर उसने खोज ही लिया.

बंदर के नये घर और द्वीप के मध्य में, नदी के अंदर, एक चट्टान थी जो पानी से बाहर निकली हुई थी. मगरमच्छ ने बंदर को नदी के किनारे से उस चट्टान पर कूदते हुए देखा. वहां से कूद कर बंदर उस द्वीप पर चला गया जहां फलों के पेड़ थे.

“बंदर उस द्वीप पर सारा दिन रहेगा,” मगरमच्छ ने अपने-आप से कहा. “आज रात जब वह घर लौटेगा तो मैं उसे पकड़ लूंगा.”

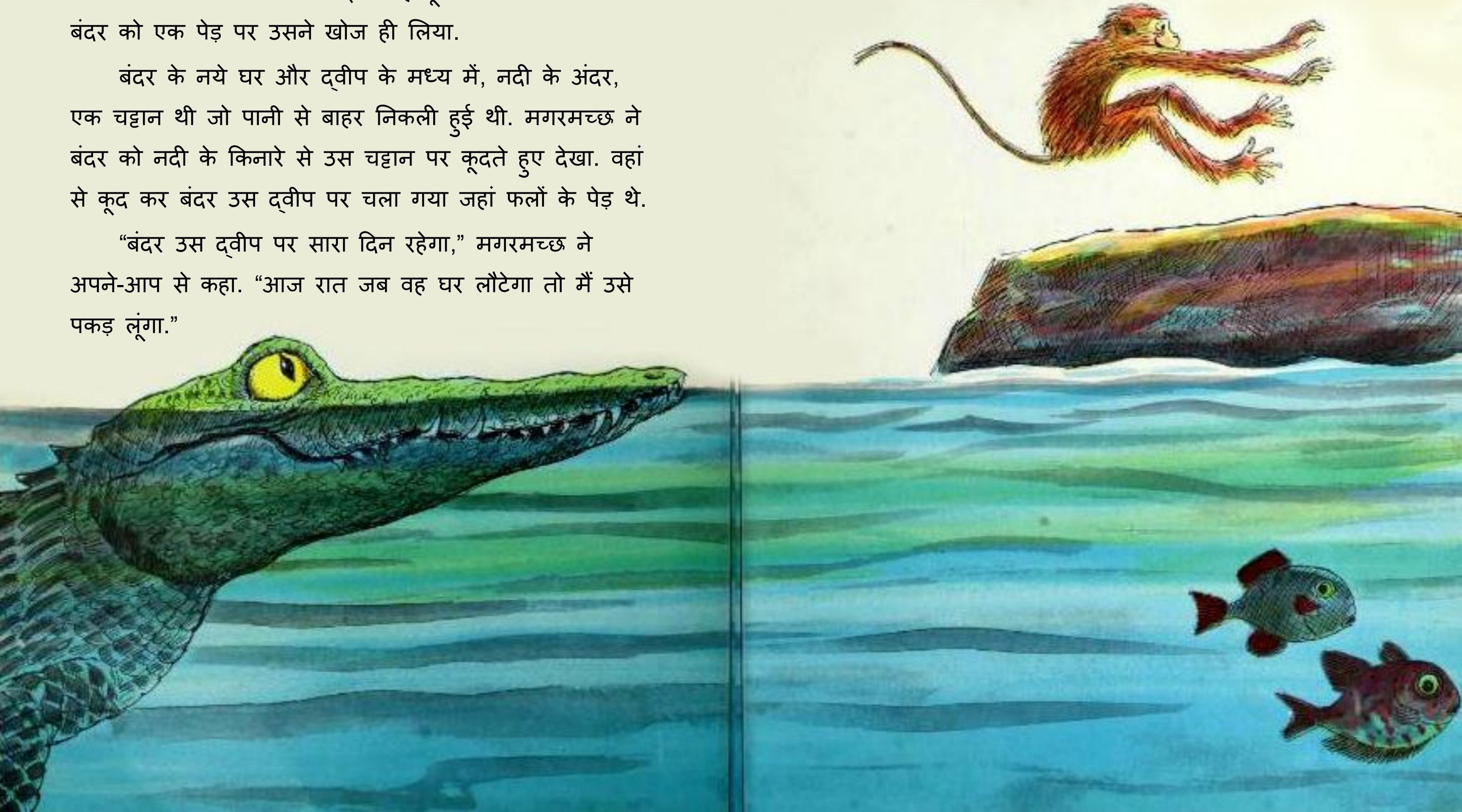

बन्दर ने खूब दावत की जबकि मगरमच्छ द्वीप के आसपास तैरता रहा और सारा दिन उसे देखता रहा. रात होने लगी तो मगरमच्छ उस चट्टान पर चढ़ गया और बिना हिले-डुले उस पर लेट गया.

जब पेड़ों के बीच अँधेरा होने लगा तब बंदर घर लौट चला. वह भाग कर नदी किनारे आया और अचानक वहां रुक गया.

“उस चट्टान के साथ क्या हुआ है?” बंदर को कुछ संदेह हुआ. “यह इतनी ऊंची तो कभी न थी. अवश्य ही इसके ऊपर कोई लेटा हुआ है.”

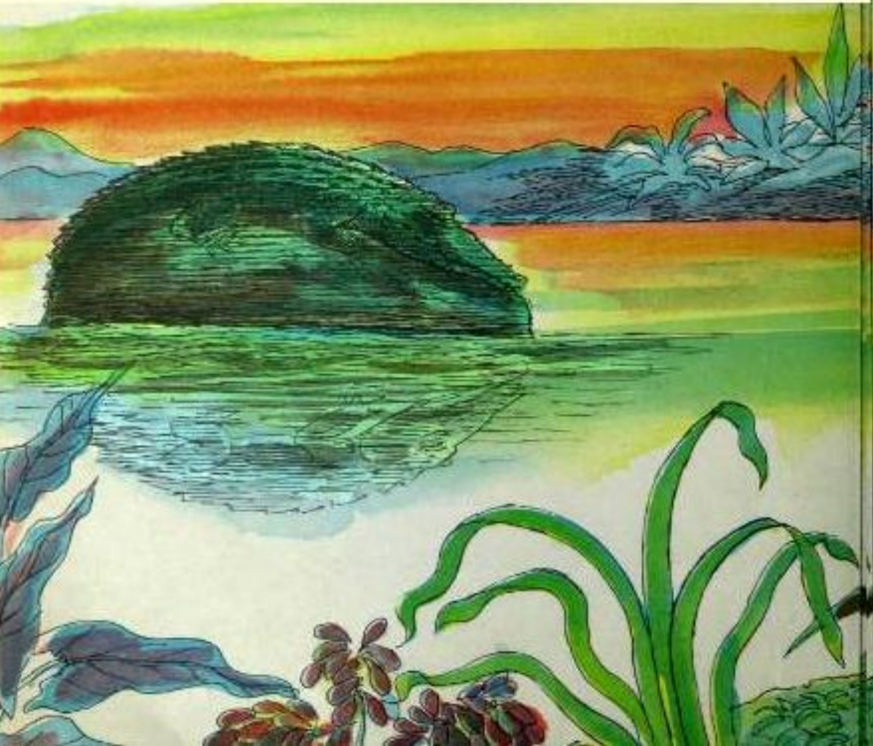

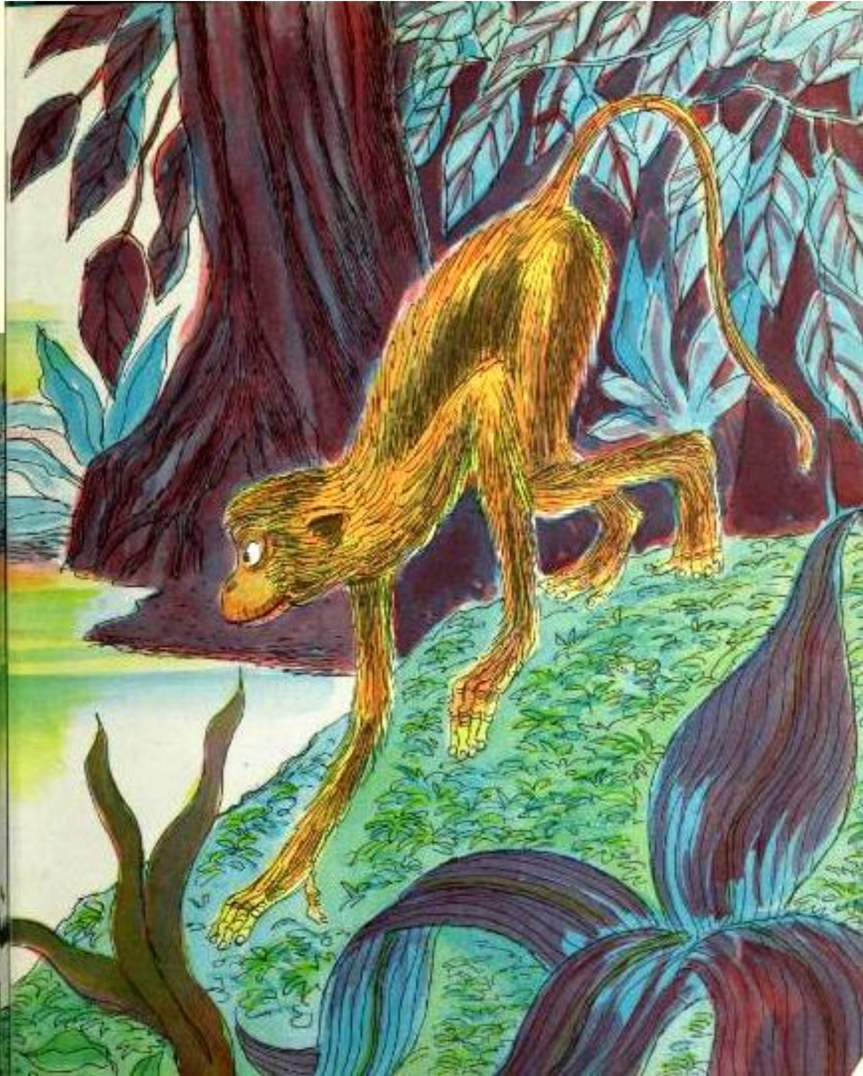

बंदर पानी के किनारे आकर चिल्लाया, “ओ, चट्टान!”

कोई उत्तर नहीं.

उसने फिर पुकारा, “ओ, चट्टान!”

अभी भी कोई उत्तर नहीं.

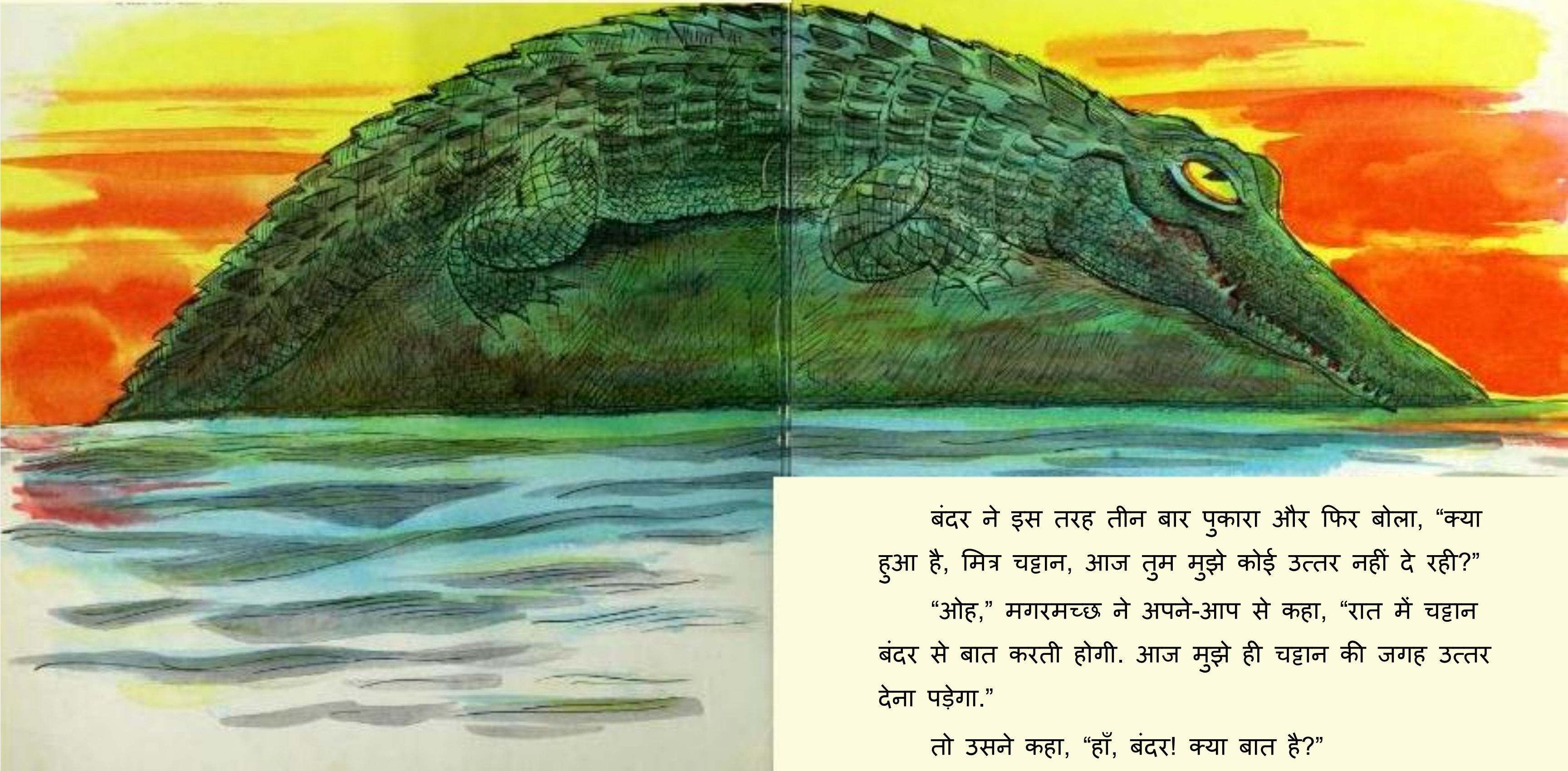

बंदर ने इस तरह तीन बार पुकारा और फिर बोला, “क्या हुआ है, मित्र चट्टान, आज तुम मुझे कोई उत्तर नहीं दे रही?”

“ओह,” मगरमच्छ ने अपने-आप से कहा, “रात में चट्टान बंदर से बात करती होगी. आज मुझे ही चट्टान की जगह उत्तर देना पड़ेगा.”

तो उसने कहा, “हाँ, बंदर! क्या बात है?”

बंदर ज़ोर से हंसा और बोला, “ओह. तो यह तुम हो, मगरमच्छ, है न?”

“हाँ,” मगरमच्छ बोला. “यहाँ मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ. और आज मैं तुम्हें खा जाऊँगा!”

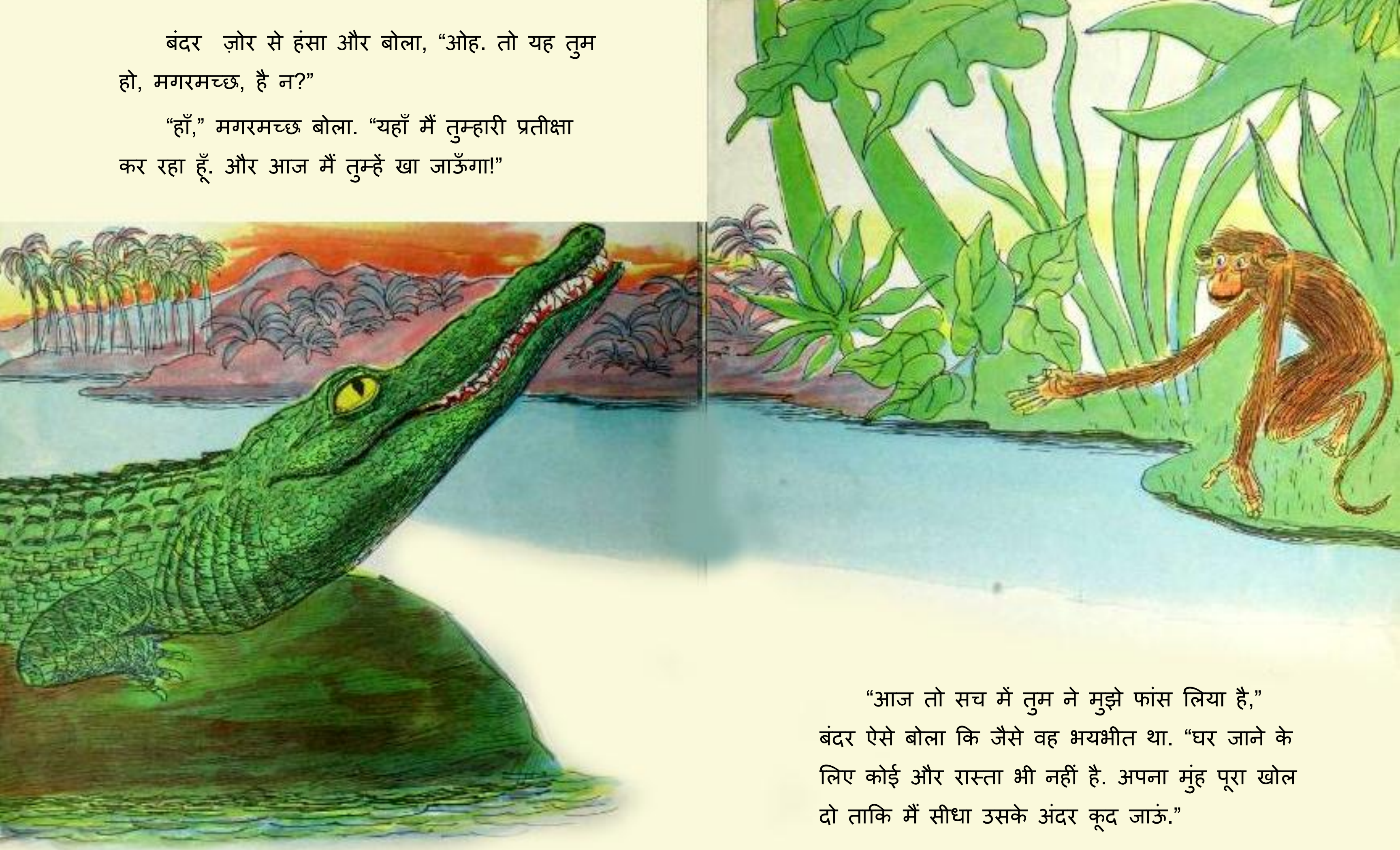

“आज तो सच में तुम ने मुझे फांस लिया है,” बंदर ऐसे बोला कि जैसे वह भयभीत था. “घर जाने के लिए कोई और रास्ता भी नहीं है. अपना मुंह पूरा खोल दो ताकि मैं सीधा उसके अंदर कूद जाऊं.”

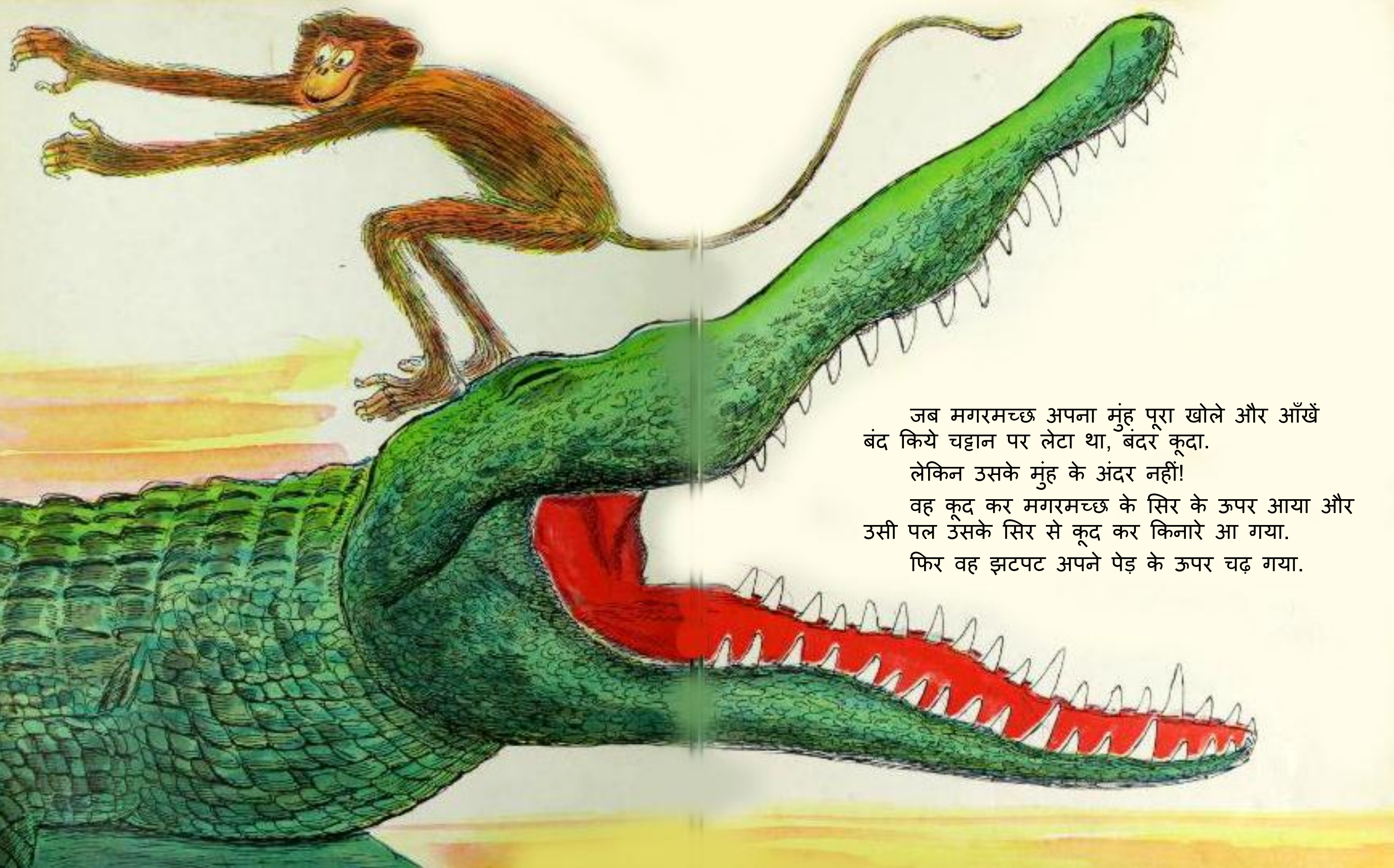

जब मगरमच्छ अपना मुंह पूरा खोले और आँखें बंद किये चट्टान पर लेटा था, बंदर कूदा.

लेकिन उसके मुंह के अंदर नहीं!

वह कूद कर मगरमच्छ के सिर के ऊपर आया और उसी पल उसके सिर से कूद कर किनारे आ गया.

फिर वह झटपट अपने पेड़ के ऊपर चढ़ गया.

जब मगरमच्छ ने देखा कि बंदर ने उसके साथ क्या चाल चली थी तो वह बोला, “बंदर, मैं समझता था कि मैं बहुत चालाक हूँ. पर तुम मुझ से अधिक चालाक हो. और तुम्हें डर भी नहीं लगता. अब मैं तुम्हें परेशान नहीं करूंगा.”

“धन्यवाद, मगरमच्छ,” बंदर बोला, “लेकिन मैं तुम से संभल कर ही रहूँगा.”

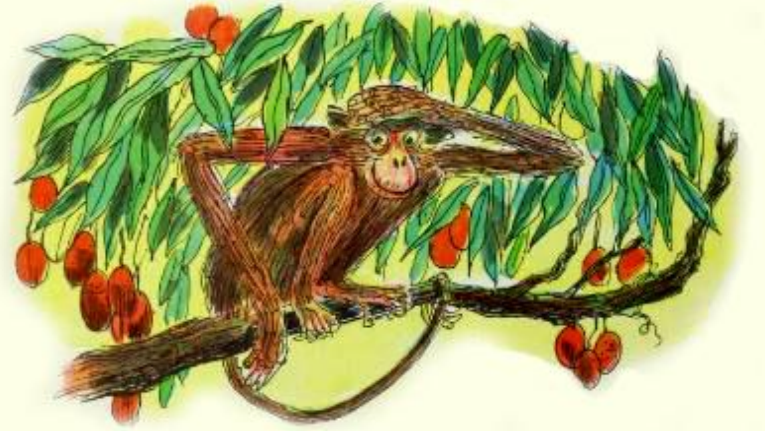

और वह हमेशा सतर्क रहा और मगरमच्छ उसे कभी पकड़ न पाया.

समाप्त